प्रातःक्लास 18/4/68 ओमशान्ति "शिवबाबा याद है?"

(आजकल सवेरे 4 से 5 बजे तक योग का क्लास होता है, बाप भी आकर सर्च लाइट देने ड्रिल सिखलाते हैं) ओमशान्ति। अभी है ज्ञान का क्लास। वह था योग का क्लास। योग कौन सा? यह बहुत अच्छी रीत समझना है; क्योंकि बहुत मनुष्य हठयोग में फंसे हुये हैं। जो कि हठयोगी मनुष्य ही सिखलाते हैं। यह है राजयोग जो कि परमात्मा सिखलाते हैं; क्योंकि राजा तो कोई है नहीं जो राजयोग सिखावे। यह भगवती–भगवान हैं। राजयोग सिखावे तब ही भविष्य (में) भगवान–भगवती बने। यह है ही पुरुषोत्तम संगमयुग की समझानी। इसको कहा जाता है पुरुषोत्तम। पुरानी और नई दुनिया का बीच। पुराने मनुष्य, नये देवताएं। इस समय सभी मनुष्य पुराने हैं। पुनर्जन्म लेते–2 आकर पुराने बने हैं। नई दुनियां में नई आत्माएं, नये देवताएं होते हैं। वहां मनुष्य नहीं कहेंगे। भल हैं मनुष्य; परन्तु दैवी गुण वाले हैं; इसलिए देवी–देवता कहा जाता है। पवित्र भी रहते हैं। बाप बच्चों को समझाते हैं काम महाशत्रु है। यह रावण का पहला–2 भूत है। कामी कुत्ता बहुत हैं ना। कोई बहुत क्रोध करते हैं तो कहा जाता है कुत्तों मिसल भौं–भौं क्यों करते हो? यह तो बड़े शत्रु हैं। लोभ, मोह के लिए भौं–2 नहीं कहेंगे। मनुष्यों में सांइस घमण्ड का क्रोध कितना है। यह भी बहुत नुकसानकारी है। काम का भूत आदि, मध्य, अंत दुःख देने वाले हैं। एक/दो पर काम कटारी चलाते हैं ना। यह भी बातें समझ कर फिर औरों को समझानी हैं। तुम्हारे सिवाय बाप से वर्सा लेने का सच्चा रास्ता तो कोई बता न सके। तुम बच्चे ही बता सकते हो। बेहद के बाप से इतना बड़ा वर्सा कैसे मिलता है। जो किसको समझा नहीं सकते हैं तो ज़रूर पढ़ाई पर ध्यान नहीं। बुद्धि योग कहां भटकता है। युद्ध का मैदान है ना। ऐसे कोई मत समझे सहज बात है। तूफान, मन की विकल्प ढेर के ढेर न चाहते भी आवेंगे। इसमें मूँझना न है। योगबल से ही माया भागेगी। इसमें पुरुषार्थ बहुत है। धंधे–धोरी में कितने थक जाते हैं; क्योंकि देह अभिमान में रहते हैं। देहअभिमान कारण बहुत बात–चीत करनी पड़ती है। बाप कहते हैं– देहीअभिमानी बनो। देही अभिमानी बनने से जो बाप समझाते हैं वह औरों को समझावेंगे। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। बाप की ही शिक्षा देंगे। बाहरमुखी न होना चाहिए। अंतर्मुखी होना है। भल बाहरमुखी होना भी पड़े। जितनी फुर्सत मिले कोशिश कर अंतर्मुख होना है। तब ही पाप कटेंगे। नहीं तो न पाप कटेंगे न ऊँच पद पावेंगे। जन्म–जन्मांतर के पाप सिर हैं। सबसे जास्ती पाप ब्राह्मणों के हैं। उनमें भी नम्बरवार हैं। जो बहुत ऊँच बनते हैं वही फिर बहुत नीच भी बनते हैं। उनको ही फिर बेगर बनना है। फिर प्रिन्स बनना है। प्रिन्स ही बेगर बनते हैं। अच्छी रीत ड्रामा को समझाना है। जो पहले आये हैं वही (फिर) पिछाड़ी में भी आवेंगे। जो पहले पावन बनते हैं वही पहले पतित बनते हैं। बाप कहते हैं मैं भी आता ही हूँ इनके बहुत जन्मों के अंत में। सो भी जब वानप्रस्थ अवस्था होती है। इस समय छोटे–बड़े सभी वानप्रस्थ अवस्था। बाप के लिए गायन भी है सर्व की सद्गति करने वाला है। वह होते ही हैं पुरुषोत्तम संगमयुग पर। यह पुरुषोत्तम संगमयुग भी याद करना है। जैसे मनुष्यों को कलयुग याद है। संगमयुग सिर्फ़ तुमको याद है। तुम्हारे में भी नम्बरवार। जो सर्विस पर हैं। बहुतों को अपना गोरखधंधा ही याद रहता है। बाहर से मुँह हटा हुआ हो तो धारणा भी हो। एक गीत भी सुना ना अंत काल जो स्त्री सिमरे.....गीत जो अच्छे–2 हैं, जिनका ज्ञान से कनेक्शन है वह रखनी चाहिए। जैसे छी–2 दुनियां से जाना ही होगा। दूसरा नयनहीन को राह दिखाओ प्रभु..... गीत तो मनुष्यों ने बनाये हैं, जिनको इस संगमयुग का कुछ भी पता नहीं है। इस समय अभी अंधे हैं ना। जब प्रभु आवें तब ही सभी को रास्ता बतावें। अकेले को तो नहीं बतावेंगे। यह है उनकी शिवशक्ति सेना। अभी बम्बई में एक शक्ति सेना निकली है; क्योंकि आजकल झूठ तो बहुत है ना। आगे जवाहर भी सच्ची थी। फिर जब दाम बढ़ता गया तो झूठ जवाहर आदि ऐसी निकली जो सच्ची से भी अच्छी रौनक। वैसे यह भी झूठे योग वाले निकले हैं। वह हैं हठयोगी। राजयोग तो भगवान

के सिवाय कोई सिखा न सके। भगवान को तो अपना शरीर है नहीं। वह है ही निराकार। बाकी जो भी हैं सभी शरीरधारी हैं। ऊँच ते ऊँच तो एक ही बाप है। तुमको पढ़ाते हैं। यह तुम ही जानो। तुम्हारे में भी नम्बरवार हैं। किसको शिक्षा देने का भी अक़्ल चाहिए। वॉरनिंग देनी चाहिए। बड़े–2 अखबार में डालना चाहिए। मनुष्य जो योग सिखलाते हैं वह है हठयोग। राजयोग एक ही परमपिता परमात्मा बाप सिखलाते हैं जिससे मुक्ति–जीवनमुक्ति दोनों ही मिलती है। हठयोग से दोनों नहीं मिलती है। यह हठयोग तो परम्परा से चला आया है। पुराना है। यह राजयोग सिर्फ़ संगम पर ही बाप सिखलाते हैं। बाबा ने समझाया था भाषण जब करते हो तो टॉपिक्स निकालनी चहिए; परन्तु ऐसे करते नहीं हैं। श्रीमत पर चलने वाले बहुत ही थोड़े हैं। (पहले) प्वाइन्ट्स लिखो फिर रिपीट करो तो याद आवेगा। फिर पक्का करो। ओरली भाषण करना है। तुमको पढ़कर तो सुनाना नहीं है। विचार–सागर–मंथन कर भाषण करने से उसमें ताकत रहेगी। और अपन को आत्मा समझो। हम भाईयों को सुनाते हैं। ऐसे समझने से भी ताकत रहेगी। यह तो बहुत ही ऊँच मन्ज़िल है। पान का बीड़ा उठाना कोई मासी का घर नहीं है। जितना तुम रुस्तम बनेंगे उतना ही माया का वार होगा। ह(नु)मान भी रुस्तम थे ना। तब तो कहा (रावण) भी हमको हिलावे तो दिखावे। यह स्थूल बातें नहीं। वह शास्त्रों में तो सभी हैं दंत कथाएं। यह कान जो बाप के सुनहरी ज्ञान सुनने वाले थे वह दंत कथाएं सुन–2 एकदम पत्थर बुद्धि बन गये हैं। भक्तिमार्ग में कितनी दुर्दशा हो गई है। ..... पैसे भी गंवाई। सीढ़ी ...नीचे ही उतरते आये। 84 जन्मों की कहानी है ना। जो भी भक्ति की है नीचे ही उतरे हैं। अभी बाप ऊपर चढ़ना सिखलाते हैं। अभी तुम्हारी चढ़ती कला है। बुद्धि योग बाप के साथ न लगावेंगे तो ज़रूर नीचे ही .....। बाप को याद करते हो तो ऊपर चढ़ते हो। मेहनत है। बहुत बच्चे गफ़लत करते हैं। धंधे आदि में बाप ..... सब भूल जाते हैं। माया तूफान में ला देती है। फलाना ऐसा है, यह करता है, यह ब्राह्मणी ऐसी है .....अवगुण है। इसमें तुम्हारा क्या जाता है? सर्वगुण सम्पन्न तो अभी कोई बना नहीं है। कोई का भी (अवगुण न देखो, गुण ही ग्रहण) करना है। अवगुण देखो तो मुँह ही मोड़ दो। मुरली तो चलती है ना। यह सुनते धारण करते..... है। बुद्धि से समझाना है। वह बाबा की बातें बिल्कुल ही ठीक हैं। जो ..... न लगे तो छोड़ देना चाहिए। पढ़ाई से कब रूसना न चाहिए। ब्राह्मणी से रूसा गोया बा(प) से रूसा। ऐसे ....बच्चे हैं, फिर सेन्टर्स पर आते ही नहीं। बि(ग)ड़ पड़ते हैं। पटियाला में कितना एक/दो से बिगड़ पड़ते (हैं।) भल कोई ऐसा भी है, तुमको मुरली सुनने से (काम)। मुरली जो सुनते हैं उनमें से अच्छी–2 प्वाइन्ट्स धारण (करनी) है। अच्छा, ब्राह्मणी से बात (करने में मज़ा नहीं आता है तो) शान्ति में मुरली सुन कर चले जाना चाहिए। रूठना न चाहिए। हम यहां नहीं (आवेंगे नम्बरवार तो होते हैं ना।) स्कूल में टीचर से स्टूडेन्ट बिगड़ते हैं तो आपस में मिल उनको भगा देते हैं। .....से कोई खुश नहीं रहते हैं तो तो एपलिकेशन कर बदली करा देते हैं। यहां तो वह बात नहीं। ..... कोई बदली करा नहीं सकते। वह (भी अच्छा) है (जो सुबह को) तुम याद में बैठते हो। बाप आकर सर्चलाइट देते हैं। बाप अपना अनुभव भी बताते हैं ना। जब बैठते (हैं) तो जो भी अनन्य हैं, वह तो पहले याद आते हैं। भल विलायत में हैं वा बम्बई में हैं वा कलकत्ता में हैं, अनन्य बच्चों को याद कर उनको सर्चलाइट देते हैं। बच्चे तो बहुत हैं। यहां भी हैं; परन्तु याद उनको करते जो अच्छी सर्विस करते हैं। (भ)ल वह यहां नहीं हैं। जैसे ... की आत्मा अथवा ..... बच्चे जाते हैं तो भी उनकी आत्मा को भी याद करते हैं। बहुत सर्विस करके गई है। है तो (ज़रूर) यहां ही कोई के (घर) में। तो उनको भी बाप याद कर सर्चलाइट देते हैं। आत्मा की (बात) है ना। वहां भी जो बहुत सर्विस करते हैं उनको भी याद करते हैं। बाप जानते हैं यह भी हमारे (बच्चे)–बहुत अच्छी सर्विस करते हैं। यह तो धमचक्कर मचाते हैं। यह लोभ में, मोह में हैं। क्रोध में हैं। वह ..... हैं। बाबा ने कहा यहां सर्चलाइट भी दो देते हैं। दो इजंन है ना। यह भी इतना ऊँच पद .....

तो ताकत होगी। भल बाबा कहते हैं हमेशा समझो शिवबाबा ही पढ़ाते हैं। तो उनकी याद रहेगी। बाकी यह तो समझते हो ना यहां दो बत्ती है। और तो कोई में दो बत्ती है नहीं; इसलिए यहां दो बत्तियों के सम्मुख आते हैं तो रिक्रेश अच्छी होते हैं। टाइम भी सवेरे का अच्छा है। स्नान आदि किया है तो एकान्त में सवेरे ऊपर कोठे पर चले जाना चाहिए। बाबा ने कोठे बनाये ही हैं इसलिए। एकान्त में जाकर बैठें। पैदल करें। पादरी लोग भी एकदम सायलेंस में जाते हैं। किसको देखेंगे भी नहीं। कोई देखते भी हैं। सभी एक जैसे तो हो न सके। वह तो एकदम सायलेंस में पैदल करते हैं। ज़रूर क्राइस्ट को ही याद करते होंगे। गॉड को तो जानते ही नहीं। अगर गॉड को याद करते होंगे तो शिवलिंग बुद्धि में होगा। अपने ही मस्ती में जाते हैं। तो उनसे भी गुण उठाना है। दत्तात्रेय सबसे गुण उठाते थे न। मिसाल एक का ही दिया जाता है। तुम बच्चे भी दत्तात्रेय हो नम्बरवार। बाहर में जावेंगे तो असुरों, बन्दरों को ही देखेंगे; इसलिए कोठे बहुत अच्छे हैं। एकान्त में जाकर पैदल करो। जितनी कमाई चाहे कर सकते हो। यहां तो गोरखधंधा आदि कुछ है नहीं। टाइम भी बिल्कुल अलग है 4 बजे। बाहर में तो सवेरे आने करने में डर रहता है। यहां तो डर की बात ही नहीं। घर में बैठे हो। पहरा भी है। यज्ञ में पहरा भी देना पड़ता है। कोई चीज़ पापात्मा न ले जावे; क्योंकि यज्ञ का एक–2 कौड़ा बहुत कीमती है; इसलिए सेफ्टी फर्स्ट। यहां तो कोई आवेंगे नहीं। माताएं हैं ना। जानते हैं यहां ज़ेवर आदि कुछ है नहीं; इसलिए यहां से कुछ मिल न सके। मन्दिर भी नहीं है। जो ज़ेवर आदि उठा सके। आजकल चोरियां तो सभी जगह होती ही हैं। विलायत में भी पुरानी चीज़ें चोरी कर ले जाते हैं। ज़माना ही बिल्कुल डर्टी है। काम महाशत्रु है ना। वह घूमड़ा–2 कर देती हैं। तो सवेरे एक क्लास होता है एवर हेल्दी बनने का। और फिर यह है एवर वेल्दी बनने का। बाप को याद भी करना है। विचार–सागर–मंथन भी करना है। बाप को याद करेंगे तो वर्सा भी याद आवेगा। यह युक्ति बहुत सहज है। जैसे बाप बीज रूप है, झाड़ के आदि, मध्य, अंत को जानते हैं, तुम्हारा भी धंधा यह। बीज को याद करेंगे तो पवित्र बनेंगे। चक्र को याद करेंगे तो धन मिलेगा। चक्रवर्ती राजा बनेंगे। राज विकर्म और राजा विकर्माजीत। दो सम्वत है ना। मिक्स कर दिया है। रावण आया तो विकर्म सम्वत शुरू हुआ। डेट बदल गई। वह चलता है एक से 2500 वर्ष फिर 2500 से 5000 वर्ष। हिन्दुओं को तो अपने धर्म का भी पता नहीं है। यह एक ही धर्म है जो अपने धर्म को भूल गये हैं। अधर्मी बन जाते हैं। अपने धर्म और धर्म स्थापक को भूल जाते हैं। तुम समझा सकते हो आर्य समाज कब से शुरू हुआ? आर्य सुधरेले थे सतयुग में। अनआर्य अनसुधरेले हैं अभी कलियुग में। अभी तुम आर्य बनते हो। बाप आकर सुधारते हैं। अभी तुम्हारे बुद्धि में तो सारा चक्र है। जो अच्छे पुरुषार्थी हैं खुद भी जानते हैं, दूसरों को भी रास्ता बताते हैं। बाप तो है ही ग़रीब निवाज़। गांव वालों को भी उठाना है। चित्र तो हैं। चित्रों का रोल उठाओ। 6 चित्र काफी है। 84 के चक्र का एक ही चित्र अच्छा है। इनमें सभी क्लीयर लिखा हुआ है। बुक का बसर भी समझ जाये; परन्तु माया ऐसी प्रबल है जो एकदम तवाई बना देती है। बाप को भुला देती है। यहां तो दोनों ही लाइट इकट्ठी है। एक बाप की, एक इनकी। दोनों ही जबरदस्त है; परन्तु यह कहते हैं एक ही जबरदस्त लाइट को पकड़ो। यह भी पुरुषार्थी है ना। सभी बच्चे यहां ही भागते हैं। समझते डबल लाइट है, बाप सम्मुख बैठ सुनाते हैं। गायन भी है उनके ही साथ मिलना, खेलना, खाना, बैठना। ऐसे भी नहीं यहां ही बैठ जाना है। बहुत में बहुत सात रोज़। बस। हां, देखते हैं कोई बहुत सर्विसएबुल है, अच्छा शौक है तो .....नहीं तो सीज़न में ऐसे बिठा दें तो ढेर इकट्ठे हो जावें। ड्रामा के प्लैन अनुसार सभी कुछ होता रहता है। तुम बच्चों को आंतरिक खुशी बहुत होनी चाहिए । यह आंतरिक खुशी होती है आप समान बनाने की। पढ़ाना भी तो है। प्रजा बनावे तब तो राजा बने। पासर्पोट भी चाहिए। बाबा से कोई पूछे तो बाबा फट से बता देंगे। अपनी

शिकल तो देखो हमारे में क्या अवगुण है। कोई तो समझते ही नहीं कि हमारे में क्या अवगुण है। इसमें स्तुति, निन्दा आदि सभी सहन करना पड़ता है। यह है ना। एक ही विख चढ़े खलास। अपने याद के नशे में रहना है। फिर भी कितना प्रबन्ध दिया जाता है। सभी कुछ अच्छा मिलता है। कोई तो ऐसे भी बच्चे हैं जो मिला सो ठीक। यज्ञ के भोजन से बहुत ही लव होता है। बाबा को अनुभव है। सन्यासी लोग आते थे, खाकर उठते थे तो थाली पानी से साफ कर वह भी पी जाते थे। महत्व है ना। तुमको भी आगे चलकर पता पड़ेगा। मनुष्य भूख में झाड़ आदि के पत्ते भी खा लेते हैं। तुम्हारे में भी कोई–कोई को खाना पड़ेगा। अगर जीते रहेंगे खाना नहीं मिलेगा तो। वह–वह खावंगे जिनका बुद्धियोग बाहर में भटकता होगा। फेमन ऐसा ज़ोर से पड़ता है जो बात मत पूछो। करोड़ों मनुष्य मरते हैं। अभी तुमको ऐसी जगह ले जाते हैं जहां दुःख का नाम नहीं। नाम ही है स्वर्ग। यह चित्र कोई ओरिजिनल थोड़े ही है। यह तो निकल भी न सके। पहले तो आत्मा ऐसा बनाना है। चित्र में तो साफ दिखाया है ऐसा राजा–रानी बनना है। वण्डरफुल तो काला चित्र रखा है। अर्थ का तो किसको भी पता नहीं। काले भूत हैं। आत्मा में 5 विकार हैं ना। तो काले भूतों का मन्दिर बना रखा है। आत्मा काली थी। उनको तुम काला कैसे रखेंगे? कितने बेसमझ हैं। अभी तुम समझदार बनते हो। बाप कहते हैं जो बिल्कुल ही बेसमझ था उनमें ही प्रवेश करता हूँ। कहते हैं अपन को ब्रह्मा कहलाते हैं। अरे, झाड़ में ऊपर में भी , तो नीचे भी दिखाया है। राजयोग की तपस्या कर रहे हैं। मनुष्य तो बिल्कुल ही जैसे पत्थर बुद्धि हैं। कुछ भी नहीं समझते। बात मत पूछो। मेहतर से मनुष्य छी–छी करते हैं ना। (यह तो भार) खाने वाले हैं; इसलिए उन्हों को तो कुछ भी न करना है; इसलिए फिर झगड़ा भी हो पड़ता है। शुरू से लेकर इस बात पर ही झगड़ा चला है। बाबा की कैसी युक्ति थी, सभी को कहा चिट्ठी लेकर आओ। हम अमृत पीने जाते हैं। अमृत पी फिर विख नहीं पीना है। पहले हम थोड़े ही जानते थे कि ..... झगड़ा निकलेगा। पीछे पता पड़ा। विख न मिलने से कितना झगड़ा हो (गया)। हमको नदी पार जाना पड़ा। यह बातें कोई समझू बैठ सुने तो वण्डर खावे। कितने बच्चों को सम्भालते थे। कितनी सर्विस करते थे। अभी बोलो सफाई करो तो अण्डे ही बाहर निकल आयें। देहअभिमान बहुत है। सारा दिन देह को ही श्रृंगारते रहेंगे। बाप कहते हैं ये तो पुराना छी–2 सड़ा हुआ चोला है। उनको छोड़ना है। हम वनवा में हैं। कपड़ा आदि साधारण। अच्छे–2 कपड़ों से भी देहअभिमान आता है; इसलिए ऐसी चीज़ न पहनना चाहिए। पहने होंगे तो सभी की नज़र चढ़ेगी। आगे पारसी लोग बहुत ही सुन्दर होती थीं। काली जाली मुँह पर लगा लेती थीं तो किसकी नज़र न पड़े। जो बाप तुमको इतना गुल–2 बनाते हैं उनके श्रीमत पर तुम क्यों नहीं चलते हो? भल अपना धंधा आदि करो, साथ में पढ़ाई तो पढ़ो ना। ड्रामा को भी बहुत महीनता से समझना पड़ता है। जो कुछ पास हो गया, फिनिश। उनका चिंतन नहीं। (मर) गया खलास। तुम अपने काम में लग जाओ। बीती को चितवो नहीं। और कोई आशा भी न धरो। तुमको यह पता नहीं है कि हमको क्या चाहिए। बाप कहते हैं मैं आकर तुमको स्वर्ग का मालिक बनाता हूँ। तुम्हारे में बुद्धि में थोड़े ही था कि हम स्वर्ग़ के मालिक बनेंगे। बाबा विश्व का मालिक बनावेंगे। बाप सभी आशाएं बन्द कर देते हैं। नर से नारायण बनना है इसी पुरुषार्थ से। कोई नई बात नहीं। अनेक बार तुम कौड़ी जैसा(से) हीरे जैसा बने हो। गोल्डेन एज से आयरन एज। यह भी तुम सिर्फ़ जानते हो। तुम्हारे भी नम्बरवार। जाना तो चाहिए एकदम फर्स्ट क्लास नये मकान में। नये चीज़ में सभी ताकत भरी रहती है। दिन–प्रतिदिन पुरानी होती जाती है। 6 मास, 12 मास हुआ तो फ़र्क पड़ जाता है। बाप और वर्सा जितना याद करेंगे उतना ही ऊँच पद पावेंगे। और कुछ भी नहीं है। अलफ़ और बे। अलफ़ है बाबा। इनकी तुम महिमा करते हो। अभी खुद ऐसा बनो पुरुषार्थ कर। अच्छा, आज भोग है। मीठे–2 सिकीलधे बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। शिवबाबा और वर्सा याद है?